Naujawan Ki Tauba (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 211
WEEKLY BOOKLET : 211

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब "नेकी की दा'वत" की एक क़िस्त मअ तरमीम व इज़ाफ़ा बनाम

नौ जवान की तौबा

सफ़हात 24

- अल्लाह का प्यारा बनाने वाले लोग 08
- हुज़ूरते हसन बसरी और सरमायादार 09
- हाफ़िज़े मिल्लत की करामत 19

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मत इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला	:	**नौ जवान की तौबा**
पहली बार	:	मुह़र्रमुल ह़राम **1443** हि., अगस्त **2021** ई.
ता'दाद	:	000
नाशिर	:	**मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

नौ जवान की तौबा

येह रिसाला **(नौ जवान की तौबा)**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ईमेल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 98987 32611 • E-mail :hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

येह मज़्मून "नेकी की दा'वत" सफ़ह़ा 198 ता 216 से लिया गया है ।

नौ जवान की तौबा

दुआ़ए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 22 सफ़ह़ात का रिसाला : "**नौ जवान की तौबा**" पढ़ या सुन ले, उसे अपना और अपने प्यारे प्यारे आख़िरी नबी का फ़रमां बरदार बना कर बे ह़िसाब मग़्फ़िरत से नवाज़ दे ।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ऐ लोगों ! बे शक बरोज़े क़ियामत उस की दहशतों (या'नी घबराहटों) और ह़िसाब किताब से जल्द नजात पाने वाला शख़्स वोह होगा जिस ने तुम में से मुझ पर दुन्या के अन्दर ब कसरत दुरूद शरीफ़ पढ़े होंगे । (فردوس الاخبار، 5/277، حدیث:8175)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

नौ जवान की तौबा

आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के **मक्तबतुल मदीना** की, "**तौबा की रिवायात व ह़िकायात**" (132 सफ़ह़ात) सफ़ह़ा 75 ता 77 पर है : ह़ज़रते **सालेह़ मुर्री** رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने एक **इज्तिमाअ़** में अपने बयान के दौरान सामने बैठे हुए एक नौ जवान से फ़रमाया : "कोई आयत पढ़ो ।" तो उस ने **सूरतुल मुअमिन** की आयत नम्बर 18 तिलावत की :

﴿وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْاٰزِفَةِ اِذِ الْقُلُوْبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ كٰظِمِيْنَ ۬ؕ مَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ حَمِيْمٍ وَّلَا شَفِيْعٍ يُّطَاعُ ؕ﴿۱۸﴾﴾

(پ24،المؤمن:18) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और उन्हें डराओ उस नज़्दीक आने वाली आफ़त के दिन से जब दिल गलों के पास आ जाएंगे ग़म में भरे। और ज़ालिमों का न कोई दोस्त न कोई सिफ़ारिशी जिस का कहा माना जाए।

येह आयते मुबारका सुन कर आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : कोई ज़ालिम का दोस्त या मददगार किस त़रह़ हो सकता है ? क्यूं कि वोह तो **अल्लाह** पाक की गिरिफ़्त (या'नी पकड़) में होगा। बेशक तुम सरकशी करने वाले **गुनहगारों** को देखोगे कि उन्हें **ज़न्जीरों** में जकड़ कर **जहन्नम** की त़रफ़ ले जाया जा रहा होगा और वोह बरहना (या'नी नंगे) होंगे, उन के जिस्म बोझल, चेहरे सियाह (या'नी काले) और आंखें ख़ौफ़ से नीली होंगी। वोह **चिल्लाएंगे :** हम हलाक हो गए ! हम बरबाद हो गए ! हमें ज़न्जीरों में क्यूं जकड़ा गया है ? हमें कहां ले जाया जा रहा है ? और हमारे साथ येह सब क्या हो रहा है ? फ़िरिश्ते उन्हें **आग के कोड़ों** से मारते हुए हांकेंगे, कभी वोह मुंह के बल गिरेंगे और कभी उन्हें घसीट कर ले जाया जाएगा। जब रो रो कर उन के आंसू ख़त्म हो जाएंगे तो **ख़ून के आंसू** बहने लगेंगे, उन के दिल दहल जाएंगे और ह़ैरान व परेशान होंगे अगर कोई उन्हें देख ले तो उन पर निगाह न जमा सके, न ही अपना दिल संभाल सके, येह हौलनाक मन्ज़र देखने वाले के बदन पर लरज़ा त़ारी हो जाए। येह फ़रमाने के बा'द ह़ज़रते **सालेह़ मुर्री** رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه बहुत रोए और एक आहे सर्द दिले पुरदर्द से खींच कर फ़रमाया : "अफ़्सोस ! कैसा दिल हिला देने वाला मन्ज़र होगा।" येह कह कर फिर रोने लगे, आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को रोता देख कर ह़ाज़िरीन भी रोने लगे। इतने में एक नौ जवान खड़ा हो गया और कहने लगा : "या सय्यिदी ! क्या येह सारा मन्ज़र बरोज़े क़ियामत होगा ?"

आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने जवाब दिया : "हां, येह मन्ज़र ज़ियादा त़वील नहीं होगा क्यूं कि जब उन्हें जहन्नम में डाल दिया जाएगा तो उन की आवाज़ें आना बन्द हो जाएंगी।" येह सुन कर नौ जवान ने एक चीख़ मारी और कहा : "अफ़्सोस ! मैं ने अपनी ज़िन्दगी ग़फ़्लत में गुज़ार दी, अफ़्सोस ! मैं कोताहियों का शिकार रहा, अफ़्सोस ! मैं ख़ुदाए बारी की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी में सुस्ती करता रहा, आह ! मैं ने अपनी ज़िन्दगी बेकार ज़ाएअ़ कर दी।" येह कह कर वोह रोने लगा। कुछ देर बा'द उस ने रब्बे काएनात की बारगाहे बेकस पनाह में यूं मुनाजात की : "ऐ मेरे परवर दगार ! मैं गुनहगार तौबा के लिये ह़ाज़िरे दरबार हूं, मुझे तेरे सिवा किसी से कोई सरोकार नहीं, गुनाहों से मुआ़फ़ी दे कर मुझे क़बूल फ़रमा ले, मुझ समेत तमाम ह़ाज़िरीन पर अपना फ़ज़्लो करम फ़रमा और हमें जूदो नवाल (या'नी अ़त़ा व बख़्शिश) से मालामाल कर दे, **या अरह़मर्राह़िमीन !** (या'नी ऐ सब से बढ़ कर रह़्म फ़रमाने वाले) मैं ने गुनाहों की गठड़ी तेरे सामने रख दी है और सच्चे दिल से तेरी बारगाह में ह़ाज़िर हूं, अगर तू मुझे क़बूल नहीं फ़रमाएगा तो यक़ीनन मैं हलाक हो जाऊंगा।" इतना कह कर वोह नौ जवान ग़श खा कर गिर पड़ा। और चन्द रोज़ बिस्तरे अ़लालत पर गुज़ार कर (या'नी बीमार रह कर) मौत से हमकनार हो गया। उस के जनाज़े में बे शुमार लोग शरीक हुए, रो रो कर उस के लिये दुआ़एं की गईं। ह़ज़रते सालेह़ मुर्री رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ अक्सर उस का ज़िक्र अपने **बयान** में किया करते। एक दिन किसी ने उस नौ जवान को ख़्वाब में देखा तो पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِكَ या'नी **अल्लाह** पाक ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? तो उस ने जवाब दिया : "मुझे ह़ज़रते सालेह़ मुर्री رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ के इज्तिमाअ़

से बरकतें मिलीं और मुझे **जन्नत** में दाख़िल कर दिया गया ।" (کتاب التوّابین ص ۲۵۰۔۲۵۲) **अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

ख़्वाब में बारगाहे रिसालत में तिलावत की सआ़दत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! बा अ़मल **मुबल्लिग़ीन** का बयान किस क़दर पुर असर होता है, ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले मुबल्लिग़ का बयान तासीर का तीर बन कर गुनहगार के जिगर से आर पार हो जाता और बसा अवक़ात उस की दुन्या व आख़िरत संवार देता है । ह़ज़रते सालेह़ मुर्री رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ बड़े ज़बर दस्त **क़ारी** भी थे, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की क़िराअत में सोज़ ही सोज़ होता था आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : एक बार मैं ने ख़्वाब में जनाबे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने क़ुरआने करीम की तिलावत की सआ़दत पाई, **ताजदारे रिसालत** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **ऐ सालेह़ !** येह तो क़िराअत हुई **रोना** कहां है ? (احیاء العلوم، 368/1) **अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

तिलावत में रोना कारे सवाब है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! क़ुरआने करीम की तिलावत करते हुए **रोना** मुस्तह़ब है । **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : क़ुरआने पाक की तिलावत करते हुए रोओ और अगर रो न सको तो रोने की सी शक्ल बनाओ । (ابن ماجہ، 129/2، حدیث:1337)

अ़त़ा कर मुझे ऐसी रिक़्क़त ख़ुदाया करूं रोते रोते तिलावत ख़ुदाया

मरने से चन्द माह पहले इन्फ़िरादी कोशिश

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! तिलावत करते या सुनते हुए रिक़्क़त त़ारी होना, आंखों से आंसू जारी होना यक़ीनन बड़ी सआ़दत की बात है मगर शैत़ान के वार से ख़बरदार ! रोना एक ऐसा अ़मल है कि इस में रिया का ख़त़रा बहुत ज़ियादा रहता है। लिहाज़ा दुआ़ वग़ैरा में बिल ख़ुसूस दूसरों के सामने रोने में रिया से बचना ज़रूरी है कि रियाकार अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार होता है। तिलावत व ना'त में इख़्लास के साथ रोने रुलाने का शौक़ बढ़ाने के लिये, आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, अपने ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ते रहिये, नमाज़ों की पाबन्दी जारी रखिये, सुन्नतों पर अ़मल करते रहिये, नेक आ'माल के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारिये और इस पर इस्तिक़ामत पाने के लिये रोज़ाना "जाएज़ा" ले कर नेक आ'माल का रिसाला पुर करते रहिये और हर माह की पहली तारीख़ को अपने यहां के दा'वते इस्लामी के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवा दीजिये और अपने इस दीनी मक़्सद "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है" के ह़ुसूल की ख़ात़िर पाबन्दी से हर माह सुन्नतें सीखने सिखाने के लिये कम अज़ कम तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये। आइये ! आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक मदनी बहार सुनते हैं : एक मुबल्लिग़ जो कि रोज़ाना पाबन्दी से चौकदर्स देते थे। एक शख़्स जो कि सुन्नतों भरी तह़रीक, "दा'वते इस्लामी" को पसन्द नहीं करता था, उस ने बर बिनाए तअ़स्सुब (या'नी तअ़स्सुब की वज्ह से) थाने में मुबल्लिग़ के ख़िलाफ़ झूटी

रपट दर्ज करवाई कि येह अ़लाक़े में इन्तिशार फैला रहा है। पोलीस आई और उस आ़शिक़े रसूल को थाने ले गई। اَلْحَمْدُلِلّٰه दा'वते इस्लामी का "मुबल्लिग़" हर जगह मुबल्लिग़ ही होता है चुनान्चे एक "मुजरिम" से मुलाक़ात पर उन्हों ने "इन्फ़िरादी कोशिश" कर के उस को दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत के लिये तय्यार कर लिया, उस ने कहा : मैं क़ैद से रिहा होउंगा तो ज़रूर ह़ाज़िरी दूंगा, क्या आप मुझे वहां मिलेंगे ? मुबल्लिग़ ने कहा : اِنْ شَآءَاللّٰه फिर उन्हों ने अपना ह़ल्क़ा नम्बर वग़ैरा बताया कि मैं इज्तिमाअ़ में वहां होता हूं। पोलीस ने उस का हुस्ने अख़्लाक़ वग़ैरा देख कर ह़क़ीक़ते ह़ाल जान ली और मा'ज़िरत त़लब करते हुए उस "आ़शिक़े रसूल" को बा इ़ज़्ज़त रुख़्सत कर दिया। चन्द माह बा'द वोह मुजरिम जब जेल से रिहा हुवा तो दा'वते इस्लामी के मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना के अन्दर हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में पहुंचा, उस ने बयान सुना, ज़िक्र और दुआ़ में उस पर रिक़्क़त त़ारी हो गई उस ने रो रो कर अपने गुनाहों से तौबा की। दुआ़ के बा'द उस मुबल्लिग़ को जिन्हों ने थाने में नेकी की दा'वत दी थी तलाशते हुए जब उन के बताए हुए ह़ल्क़े में पहुंचा तो एक इस्लामी भाई ने बताया कि अभी **पिछले मंगल ही उन मुबल्लिग़ का इन्तिक़ाल हुवा है।** येह सुनना था कि वोह दहाड़ें मार मार कर रोने लगा कि ज़िन्दगी में किसी ने पहली बार "**नेकी की दा'वत**" दी और उस की वज्ह से मैं ने तौबा की, हाए अफ़्सोस ! मैं अपने उस मोह़सिन से दोबारा मिल भी न सका। एक आ़शिक़े रसूल ने इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए उन का ज़ेह्न बनाया कि अब आप उन से मिल तो नहीं सकते मगर उन को फ़ाएदा पहुंचा सकते

हैं और इस का एक त़रीक़ा येह भी है कि उन के ईसाले सवाब के लिये आज सुब्ह़ ही हाथों हाथ सुन्नतों की तरबियत के एक माह के मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कर लीजिये। اَلْحَمْدُلِلّٰه वोह हाथों हाथ एक माह के लिये आ़शिक़ाने रसूल के साथ मदनी क़ाफ़िले में सफ़र पर रवाना हो गया। اَلْحَمْدُلِلّٰه आज वोह (साबिक़ा) "मुजरिम" दा'वते इस्लामी के मुबल्लिग़ हैं जब कि इस से पहले مَعَاذَاللّٰه वोह **शराब के अड्डे** चलाते थे।

आप थाने में भी, जेलख़ाने में भी हर जगह पर कहें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

मुबल्लिग़ हर जगह मुबल्लिग़ होता है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई मुबल्लिग़ हर जगह मुबल्लिग़ होता है, हर वक़्त हर जगह अपना लिबास और अपना अन्दाज़ सुन्नतों भरा रखता है, चाहे मह़ल्ले में हो या बाज़ार में, जनाज़े में हो या शादी की बारात में, दवाख़ाने में हो या अस्पताल में, बाग़ में हो या किसी की तदफ़ीन के लिये क़ब्रिस्तान में, जहां मौक़अ़ मिला झट **नेकी की दा'वत** के मदनी फूल बरसाना शुरूअ़ कर देता और अपने लिये सवाब का ख़ूब ज़ख़ीरा कर लेता है। मज़्कूरा **मदनी बहार** से मा'लूम हुवा कि मर्ह़ूम आ़शिक़े रसूल मुबल्लिग़ का जज़्बा भी क्या ख़ूब था कि ज़ुल्मन किसी ने थाने में ला खड़ा किया तो वहां भी नेकी की दा'वत के दीनी काम में लग गए और एक शराब का अड्डा चलाने वाले की तौबा और उस के मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी बनने का सबब बन कर ख़ुद सदा के लिये आंखें मूंद लीं।

अल्लाह पाक की मर्ह़ूम आ़शिक़े रसूल मुबल्लिग़ पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

तेरी सुन्नतों पे चल कर मेरी रूह जब निकल कर चले तू गले लगाना मदनी मदीने वाले

(वसाइले बख़्शिश, स. 287)

अल्लाह का प्यारा बनाने वाले लोग

सरवरे कौनैन, नानाए ह़सनैन صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "क्या मैं तुम्हें ऐसे लोगों के बारे में ख़बर न दूं जो न अम्बिया (عَلَيْهِمُ السَّلَام) में से हैं न शुहदा में से लेकिन बरोज़े क़ियामत अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام और शुहदा उन के मक़ाम को देख कर रश्क करेंगे, वोह लोग नूर के मिम्बरों पर बुलन्द होंगे, येह वोह लोग हैं जो **अल्लाह** पाक के बन्दों को **अल्लाह** पाक का मह़बूब (या'नी प्यारा) बन्दा बना देते हैं और वोह ज़मीन पर (लोगों को) नसीह़तें करते चलते हैं।" अ़र्ज़ की गई : वोह किस त़रह़ लोगों को **अल्लाह** पाक का मह़बूब (या'नी प्यारा) बना देते हैं ? फ़रमाया : वोह लोगों को **अल्लाह** पाक की मह़बूब (या'नी पसन्दीदा) बातों का हुक्म देते हैं और **अल्लाह** पाक की ना पसन्दीदा बातों से मन्अ़ करते हैं, पस जब लोग उन की इत़ाअ़त करेंगे तो **अल्लाह** पाक इन्हें अपना मह़बूब बना लेगा।

(شعب الایمان، 1/367، حدیث:409)

मुबल्लिग़ मह़बूब ही नहीं मह़बूब गर होता है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! नेकी की दा'वत की धूमें मचाने वालों की भी कैसी बुलन्दो बाला शानें हैं, बरोज़े क़ियामत उन पर रब्बुल अनाम का इन्आ़मो इकराम देख कर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام और शुहदाए उ़ज़्ज़ाम भी रश्क करेंगे। यहां रश्क (या'नी ग़िबता) से मुराद येह कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام और शुहदाए उ़ज़्ज़ाम उन के मर्तबे को देख कर बहुत ख़ुश होंगे और उन की ता'रीफ़ो तह़सीन करेंगे या मत़लब येह कि अगर ह़ज़राते अम्बियाए किराम व शुहदाए उ़ज़्ज़ाम किसी पर

रश्क करते तो उन पर करते इस अ़ज़मतो शान का सबब क्या होगा ? येही कि वोह नेकी की दा'वत और बदी की मुमानअ़त के ज़रीए़ लोगों को बा अ़मल बना कर उन्हें "**अल्लाह** पाक का मह़बूब" बनाते होंगे। जब वोह दूसरों को **अल्लाह** पाक का मह़बूब बनाते होंगे तो ख़ुद क्यूं न **मह़बूब** होंगे !

अल्लाह का मह़बूब बने जो तुम्हें चाहे उस का तो बयां ही नहीं कुछ तुम जिसे चाहो

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

सय्यिदुना ह़सन बसरी और एक सरमाया दार

"**नेकी की दा'वत**" का सवाब कमाने में हमारे औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم बहुत पेश पेश हुवा करते थे और इस मुआ़मले में किसी से मरऊ़ब भी नहीं होते (या'नी रो'ब में भी न आते) थे चुनान्चे ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अपने शागिर्दों के हमराह कहीं तशरीफ़ लिये जा रहे थे कि एक **रईस** (या'नी सरमाया दार) को निहायत सजधज के साथ अपने ग़ुलामों के झुरमट में घोड़े पर सुवार गुज़रता देखा। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने उस से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : कहां का इरादा है ? अ़र्ज़ की : **बादशाह** के दरबार में जा रहा हूं। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने उस पर "इन्फ़िरादी कोशिश" करते हुए फ़रमाया : **ऐ भाई !** आप ने ख़ूब उ़म्दा लिबास ज़ेबे तन फ़रमाया है फिर इसे ख़ुश्बूओं से भी बसाया है और हर त़रह़ से अपने "**ज़ाहिर**" को भी सजाया है, यक़ीनन येह महूज़ इस लिये है कि **शाही दरबार** में आप को शर्मसार न होना पड़े ह़ालां कि येह बादशाहे दारे ना पाएदार (या'नी कमज़ोर दुन्या का बादशाह) और उस के अहले दरबार आप जैसे ही इन्साने ग़ैर मुख़्तार (या'नी बे इख़्तियार) हैं। अब ज़रा ग़ौर फ़रमाइये ! कल बरोज़े

क़ियामत **अल्लाह** पाक के दरबारे शाही में जब हाज़िरी होगी, वहां अम्बियाए किराम عَلَيهِمُ السَّلَام और औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ الله भी होंगे, वहां के लिये आप ने "बातिन" की आराइश व ज़ेबाइश का भी कुछ इन्तिज़ाम फ़रमाया है ? क्या वहां गुनाहों की गन्दगियों और बदकारियों की बदबूओं के साथ आप हाज़िरी देंगे ? वोह मालदार शख़्स निहायत तवज्जोह के साथ आप के इर्शादात सुन रहा था, आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने उस से पूछा : क्या आप ने कभी अपने घोड़े पर उस की ताक़त से ज़ियादा बोझ डाला है ? अ़र्ज़ की : जी नहीं । फ़रमाया : आप अपने घोड़े पर तो तर्स खाते हैं मगर अपने कमज़ोर वुजूद पर रहम नहीं करते कि मुसल्सल उस पर गुनाहों का बोझ लादे चले जा रहे हैं, सोचिये तो सही ! इसी त़रह़ गुनाहों भरी ज़िन्दगी गुज़ारी तो मरने के बा'द क्या अन्जाम होगा ! मालदार आदमी आप की "इन्फ़िरादी कोशिश" और नेकी की दा'वत से बेहद मुतअस्सिर हुवा, घोड़े से उतर कर आप का मुरीद हुवा और **अल्लाह** वाला बन गया । (सच्ची ह़िकायात, 5/208 बि तसर्रुफ़) **अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمين بِجاهِ خاتَمِ النَّبِيّين صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

नफ़्स येह क्या ज़ुल्म है जब देखो ताज़ा जुर्म है　　ना तुवां के सर पे इतना बोझ भारी वाह वाह !

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

शर्ह़े कलामे रज़ा : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस शे'र में फ़रमाते हैं : ऐ बदकार नफ़्स ! तेरे ज़ुल्मो सितम की भी अब ह़द हो गई ! तू हर लम्ह़ा मेरी ख़त़ाओं में बराबर इज़ाफ़ा करवाता और मुझ कमज़ोर तरीन बन्दे के सर गुनाहों का भारी बोझ लदवाता चला जा रहा है । (मा'लूम हुवा नफ़्से अम्मारा या'नी गुनाह व बुराई पर उभारने वाला नफ़्स हमारा दुश्मन है, हमें हर आन इस की चालों से चौकन्ना रहना ज़रूरी है)

आह ! हर लम्हा गुनह की कसरतो भरमार है ग़लबए शैतान है और नफ़्से बद अत्वार है

(वसाइले बख़्शिश, स. 128)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

नमाज़ में कैसा लिबास होना चाहिये

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **औलियाउल्लाह** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم सरमाया दारों और मालदारों की ख़ुशामदों और चापलूसियों के बजाए उन को इस्लाह़ के **मदनी फूलों** से नवाज़ते और उन्हें दो टोक नसीह़तें फ़रमाते थे। दौलत मन्दों की ख़ुशामद वोह करे जिस को उन से दुन्या की ज़लील दौलत पाने की हवस हो, **अहलुल्लाह** क़नाअ़त की मदनी दौलत से मालामाल होते हैं, इन की नज़र दौलत मन्दों के फ़ानी माल पर नहीं, रह़मते रब्बे जुल जलाल पर होती है। याद रहे ! अहले माल व सरवत की ब सबबे दौलत ता'ज़ीम की सख़्त मुमानअ़त है चुनान्चे मन्क़ूल है : जो किसी ग़नी (या'नी मालदार) की इस के ग़िना (या'नी मालदारी) के सबब तवाज़ोअ़ करे उस का दो तिहाई दीन जाता रहा। (کشف الخفاء، 2/215، رقم:2442) बयान कर्दा **ह़िकायत** में आख़िरत की फ़िक्र दिलाई गई है कि हुक्मरानों, वज़ीरों और अफ़्सरों के सामने जाते हुए तो लिबास वग़ैरा दुरुस्त किया जाता और ख़ूब टिपटॉप और ज़ीनत इख़्तियार की जाती है मगर **अल्लाह** पाक की मुक़द्दस बारगाह में पेश होने के लिये एहतिमाम का कोई ज़ेह्न ही नहीं। हम दुन्या के किसी "बड़े आदमी" के पास जाते हैं या ऐसी जगह जाना होता है जहां बहुत सारे लोग हमें देखने वाले हों तो सर के बाल, लिबास, इमामा, चादर वग़ैरा ख़ूब एह़तियात़ के साथ दुरुस्त करते हैं मगर "नमाज़" जो कि परवर दगार के अ़ज़मत वाले दरबार की ह़ाज़िरी का मौक़अ़ है उस वक़्त ज़ीनत का कोई एहतिमाम नहीं करते ! कम अज़ कम

इतना तो हो कि किसी "बड़े आदमी" के पास या दा'वते त़आ़म में जाते हुए इन्सान जो लिबास पहनता है वोही मस्जिद की ह़ाज़िरी में पहन लिया करे। मस्जिद की ह़ाज़िरी के लिये ज़ीनत करने के **मुतअ़ल्लिक़** कुरआने करीम पारह 8 **सूरतुल आ'राफ़** आयत नम्बर 31 में इर्शाद होता है :

خُذُوْا زِیْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अपनी ज़ीनत लो जब मस्जिद में जाओ।

नमाज़ के लिये इत्र लगाना मुस्तह़ब है

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ इस आयते करीमा के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी लिबासे ज़ीनत और एक क़ौल येह है कि कंघी करना, ख़ुश्बू लगाना दाख़िले ज़ीनत है और सुन्नत येह है कि आदमी बेहतर हैअत (या'नी उ़म्दा सूरत व ह़ालत) के साथ नमाज़ के लिये ह़ाज़िर हो क्यूं कि नमाज़ में रब से मुनाजात है तो इस के लिये ज़ीनत करना **इत्र लगाना मुस्तह़ब** है। मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है कि ज़मानए जाहिलिय्यत में दिन में मर्द और औ़रतें रात में नंगे हो कर त़वाफ़ करते थे। इस आयत में सत्र छुपाने और कपड़े पहनने का हुक्म दिया गया और इस में दलील है कि सत्रे औ़रत नमाज़ व त़वाफ़ और हर ह़ाल में वाजिब है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 248)

"या अल्लाह नमाज़ी बना" के चौदह हुरूफ़ की निस्बत से नमाज़ में लिबास के अह़काम पर मब्नी 14 मदनी फूल

दौराने नमाज़ लिबास पहनना

﴾1﴿ दौराने नमाज़ कुरता या पाजामा पहनने या तहबन्द बांधने से **नमाज़ टूट** जाती है। (غنیہ، ص452وغیرہا)

﴾2﴿ दौराने नमाज़ सत्र खुल जाने और इसी ह़ालत में कोई रुक्न अदा करने या तीन बार سُبْحٰنَ اللّٰه कहने की मिक़्दार वक़्फ़ा गुज़र जाने से भी नमाज़ **फ़ासिद** हो (या'नी टूट) जाती है। (درمختار 2/467)

कन्धों पर चादर लटकाना

﴾3﴿ नमाज़ में सदल या'नी कपड़ा लटकाना मक्रूहे तह़रीमी है। मसलन सर या कन्धे पर इस त़रह़ से चादर या रूमाल वग़ैरा डालना कि दोनों कनारे लटकते हों। हां, अगर एक कनारा दूसरे कन्धे पर डाल दिया और दूसरा लटक रहा है तो ह़रज नहीं। ﴾4﴿ आज कल बा'ज़ लोग एक कन्धे पर इस त़रह़ रूमाल रखते हैं कि इस का एक सिरा पेट पर लटक रहा होता है और दूसरा पीठ पर। इस त़रह़ नमाज़ पढ़ना मक्रूहे तह़रीमी है (बहारे शरीअ़त, 1/624 ह़िस्सा : 3) ﴾5﴿ दोनों आस्तीनों में से अगर एक आस्तीन भी आधी कलाई से ज़ियादा चढ़ी हुई हो तो नमाज़ मक्रूहे तह़रीमी होगी। (درمختار 2/490) ﴾6﴿ दूसरा कपड़ा होने के बा वुजूद सिर्फ़ पाजामे या तहबन्द में नमाज़ पढ़ना मक्रूहे तह़रीमी है। (عالمگیری، 1/106) ﴾7﴿ (नमाज़ में) कुरते वग़ैरा के बटन खुले होना जिस से सीना खुला रहे मक्रूहे तह़रीमी है हां अगर नीचे कोई और कपड़ा है जिस से सीना नहीं खुला तो मक्रूहे तन्ज़ीही है। (बहारे शरीअ़त, 1/630 ह़िस्सा : 3) ﴾8﴿ जानदार की तस्वीर वाला लिबास पहन कर नमाज़ पढ़ना मक्रूहे तह़रीमी है नमाज़ के इ़लावा भी ऐसा कपड़ा पहनना जाइज़ नहीं। (बहारे शरीअ़त, 1/627 ह़िस्सा : 3)

मक्रूहे तह़रीमी की ता'रीफ़

येह वाजिब का मुक़ाबिल (या'नी उलट) है इस के करने से इ़बादत नाक़िस हो जाती है और करने वाला गुनहगार होता है अगर्चे इस का गुनाह ह़राम से कम है और चन्द बार इस का इरतिकाब (या'नी अ़मल में लाना)

कबीरा (गुनाह) है। (बहारे शरीअ़त, 1/283 हिस्सा : 2) मक्रूहे तह़रीमी हो जाने वाली नमाज़ वाजिबुल इआ़दा होती है या'नी ऐसी नमाज़ को नए सिरे से पढ़ना वाजिब होता है। मक्रूहे तह़रीमी की ऐसी सूरतें भी हैं जिन में सज्दए सह्व कर लेने से नमाज़ दुरुस्त हो जाती है। इस की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के **मक्तबतुल मदीना** की किताब, "**नमाज़ के अह़काम**" (496 सफ़ह़ात) का मुत़ालआ़ कीजिये। ﴾9﴿ दूसरे कपड़े मुयस्सर होने के बा वुजूद कामकाज के लिबास में नमाज़ पढ़ना **मक्रूहे तन्ज़ीही** है। (شرح الوقایۃ، 1/198) ﴾10﴿ उलटा कपड़ा पहन कर या ओढ़ कर नमाज़ **मक्रूहे तन्ज़ीही** है। (फ़तावा रज़विय्या, 7/358 ता 360) ﴾11﴿ सुस्ती से नंगे सर नमाज़ पढ़ना मक्रूहे तन्ज़ीही है। (درمختار وردالمحتار، 2/491) नमाज़ में टोपी या इमामा शरीफ़ गिर पड़ा तो उठा लेना अफ़्ज़ल है जब कि **अ़मले कसीर** की ह़ाजत न पड़े वरना नमाज़ फ़ासिद हो जाएगी। और बार बार उठाना पड़े तो छोड़ दें और न उठाने से खुशूओ़ खुज़ूअ़ मक्सूद हो तो न उठाना अफ़्ज़ल है। (درمختار وردالمحتار، 2/491) ﴾12﴿ अगर कोई नंगे सर नमाज़ पढ़ रहा हो या उस की टोपी गिर पड़ी हो तो उस को दूसरा शख़्स टोपी न पहनाए।

अ़मले कसीर की ता'रीफ़

अ़मले कसीर नमाज़ को फ़ासिद कर (या'नी तोड़) देता है जब कि न नमाज़ के आ'माल से हो न ही इस्लाहे नमाज़ के लिये किया गया हो। जिस काम के करने वाले को दूर से देखने से ऐसा लगे कि येह नमाज़ में नहीं है बल्कि अगर गुमाने ग़ालिब हो कि नमाज़ में नहीं तब भी **अ़मले कसीर** है। और अगर दूर से देखने वाले को शक व शुबा है कि नमाज़ में है या नहीं तो **अ़मले क़लील** है और नमाज़ फ़ासिद न होगी। (درمختار، 2/464)

हाफ़ आस्तीन में नमाज़ पढ़ना कैसा ?

﴾13﴿ आधी आस्तीन वाला कुरता या क़मीस पहन कर नमाज़ पढ़ना **मक्रूहे तन्ज़ीही** है जब कि उस के पास दूसरे कपड़े मौजूद हों। ह़ज़रते सदरुश्शरीअ़ह मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "जिस के पास कपड़े मौजूद हों और सिर्फ़ नीम आस्तीन (या'नी आधी आस्तीन) या बनियान पहन कर नमाज़ पढ़ता है तो कराहते तन्ज़ीही है और कपड़े मौजूद नहीं तो कराहत भी नहीं।" (फ़तावा अम्जदिय्या, 1/193) ﴾14﴿ मुफ़्तिये आ'ज़मे पाकिस्तान ह़ज़रते क़िब्ला मुफ़्ती वक़ारुद्दीन क़ादिरी रज़वी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : हाफ़ आस्तीन वाला कुरता, क़मीस या शर्ट कामकाज करने वाले लिबास (के हुक्म) में शामिल हैं (कि कामकाज वाला लिबास पहन कर इन्सान मुअ़ज़्ज़िज़ीन के सामने जाते हुए कतराता है) इस लिये जो हाफ़ आस्तीन वाला कुरता पहन कर दूसरे लोगों के सामने जाना गवारा नहीं करते, उन की नमाज़ **मक्रूहे तन्ज़ीही** है और जो लोग ऐसा लिबास पहन कर सब के सामने जाने में कोई बुराई मह़सूस नहीं करते, उन की नमाज़ मक्रूह नहीं। (वक़ारुल फ़तावा, 2/246)

मक्रूहे तन्ज़ीही की ता'रीफ़

जिस का करना शर्अ़ को पसन्द नहीं मगर न इस ह़द तक (ना पसन्द) कि इस पर वईदे अ़ज़ाब फ़रमाए। येह सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा के मुक़ाबिल है। (बहारे शरीअ़त, 1/284 ह़िस्सा : 2) मक्रूहे तन्ज़ीही हो जाने वाली नमाज़ दोबारा पढ़ लेना बेहतर है अगर न पढ़ी तो गुनहगार नहीं।

मेरे दिल से दुन्या की चाहत मिटा कर कर उल्फ़त में अपनी फ़ना या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 78)

मदनी क़ाफ़िले ने मुझे बदल कर रख दिया !

नेकी की दा'वत का बे अन्दाज़ा सवाब कमाने की अपने अन्दर हिर्स उजागर करने के लिये दा'वते इस्लामी के दीनी माहौल से हर दम वाबस्ता रहिये और पाबन्दी के साथ हर माह कम अज़ कम तीन दिन आशिक़ाने रसूल के साथ मदनी क़ाफ़िले में सुन्नतों भरा सफ़र करते रहिये। आइये ! आप का शौक़ बढ़ाने के लिये आप को एक मदनी बहार सुनाता हूं चुनान्चे अ़लाक़ा अंधेरी (मुम्बई, अल हिन्द) के एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : मैं स्कूल की नवीं क्लास में ज़ेरे ता'लीम था, मॉडर्न और बिगड़े हुए लड़कों से दोस्ती हो गई और मैं त़रह़ त़रह़ की बुराइयों में गरिफ़्तार हो गया जिन में **चरस, गांजा, शराब** और लड़कियों से इ़श्क़ लड़ाना वग़ैरा शामिल है। ह़त्ता कि एक बार घर की पेटी (या'नी नक़्दी रखने का सन्दूक़्चा) तोड़ कर रक़म निकाल कर "गोवा" (नामी शहर) भाग गया। बिल आख़िर वापस घर आ गया। स्कूल को ख़ैरबाद कह कर A.C. की रिपेरिंग का काम सीखना शुरूअ़ कर दिया। चन्द माह के बा'द **दा'वते इस्लामी** वाले एक आशिक़े रसूल ने मुझे हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** की दा'वत दी मगर मैं ने टाल दिया। उस बेचारे ने कई बार मुलाक़ातें कर के मुझ पर **इन्फ़िरादी कोशिश** की मगर मैं इज्तिमाअ़ में जाने के लिये राज़ी न हुवा। एक बार वोही इस्लामी भाई मेरे बड़े भाई पर "इन्फ़िरादी कोशिश" कर रहे थे कि मैं वहां पहुंच गया। भाईजान ने उस इस्लामी भाई से अपने लिये मा'ज़िरत चाहते हुए मेरी त़रफ़ रुख़ कर के कहा : तुम **मदनी क़ाफ़िले** में चले जाओ। मैं "ना" कहने वाला था कि मुंह से बे साख़्ता "**हां**" निकल गई ह़ालां कि मैं येह तक नहीं जानता था कि **मदनी क़ाफ़िला** होता क्या है ! बहर ह़ाल मैं ने तय्यारी कर

ली और **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों की तरबियत के **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र पर रवाना हो गया। اَلْحَمْدُلِلّٰه **मदनी क़ाफ़िले ने मुझे बदल कर रख दिया !** मेरी आंखें खुल गईं, गुनाहों से नफ़रत और नेकियों से प्यार हो गया, मैं ने गुनाहों भरी ज़िन्दगी से तौबा की, नमाज़ों की पाबन्दी शुरूअ़ कर दी, **मदनी क़ाफ़िले** ने गुनाहों भरे माहोल में पलने वाले मुझ सख़्त ना फ़रमान बन्दे को नमाज़ी और सुन्नतों का आ़दी बना दिया। येह बयान देते वक़्त اَلْحَمْدُلِلّٰه मैं दुन्याए अहले सुन्नत की अ़ज़ीम तरीन दर्सगाह **जामिआ़ अश्रफ़िय्या मुबारक पूर** (यूपी हिन्द) में **दर्से निज़ामी** करने की सआ़दत पा रहा हूं।

छूट जाएं गुनाह, आप पाएं पनाह थोड़ी हिम्मत करें, क़ाफ़िले में चलो
तुम सुधर जाओगे गर इधर आओगे सीखने सुन्नतें, क़ाफ़िले में चलो
फ़ज़्ले मौला से जब आएंगे पाएंगे जज़्बए इल्मे दीं क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

अल जामिअ़तुल अश्रफ़िय्या और इस के बानी का मुख़्तसर तआ़रुफ़

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी की **इन्फ़िरादी कोशिश** की इस्तिक़ामत की बरकत से बिल आख़िर मुआ़शरे का बिगड़ा हुवा, गुनाहों में लिथड़ा हुवा नशई नौ जवान दीनी माहोल से वाबस्ता हो कर जामिअ़तुल अश्रफ़िय्या (मुबारक पूर हिन्द) में दाख़िला ले कर त़ालिबे इल्मे दीन बन गया। हुसूले बरकत के लिये ब निय्यते सवाब माहनामा अश्रफ़िय्या "ह़ाफ़िज़े मिल्लत नम्बर" (रजबुल मुरज्जब 1398 हि. ब मुत़ाबिक़ जून 1978 ई.) की मदद से जामिअ़तुल अश्रफ़िय्या और इस के बानी का ज़िक्रे ख़ैर करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। अल जामिअ़तुल अश्रफ़िय्या (मुबारक पूर) दुन्याए

अहले सुन्नत की अ़ज़ीमुश्शान दीनी दर्सगाह है। जो "हिन्द" के सूबा यूपी के ज़िल्अ़ आ'ज़म गढ़ के क़स्बे मुबारक पूर शरीफ़ में वाक़ेअ़ है। इस अ़ज़ीमुश्शान दीनी दर्सगाह के बानी उस्ताज़ुल उ़लमा, जलालतुल इ़ल्म, ह़ाफ़िज़े मिल्लत ह़ज़रते अ़ल्लामा शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़द्दिस मुरादआबादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه हैं। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه 29 शव्वालुल मुकर्रम 1352 हि. ब मुत़ाबिक़ 14 जनवरी 1934 ई. में अपने उस्ताज़े मुकर्रम सदरुश्शरीअ़ह बदरुत्तरीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के हुक्म पर तक्मीले दरसियात के बा'द मुबारक पूर तशरीफ़ लाए। उस वक़्त यहां एक मद्रसा "मिस्बाहुल उ़लूम" के नाम से क़ाइम था। **ह़ज़रते ह़ाफ़िज़े मिल्लत** رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की अनथक कोशिशों के बाइ़स **अल्लाह** पाक ने इसी छोटे से मद्रसे में बरकत अ़त़ा फ़रमाई और बिल आख़िर येह मद्रसा एक क़द आवर फलदार दरख़्त की हैसिय्यत इख़्तियार कर गया और **जामिअ़ा अश्रफ़िय्या** के नाम से मुतआ़रिफ़ हुवा। इस इदारे से फ़ारिग़ुत्तह़सील होने वाले (ह़ज़रात) इस के क़दीम नाम "मिस्बाहुल उ़लूम" की निस्बत से **मिस्बाही** कहलाते हैं।

सुन्नत की मह़ब्बत

ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه अपने हर अ़मल में **सुन्नत** का बहुत ज़ियादा ख़याल रखते थे। एक बार ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के दाएं पाउं में ज़ख़्म हो गया, एक साह़िब दवा ले कर पहुंचे और कहा : ह़ज़रत ! दवा ह़ाज़िर है। जाड़े (या'नी सर्दियों) का ज़माना था ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه मोज़ा पहने हुए थे, आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने पहले बाएं (या'नी उलटे) पावं का मोज़ा उतारा, वोह साह़िब बोल पड़े : ह़ज़रत ! ज़ख़्म तो दाहिने (या'नी सीधे) पावं में है ! आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : बाएं (या'नी उलटे) पावं का पहले उतारना **सुन्नत** है।

ह़ाफ़िज़े मिल्लत की करामत

अल जामिअ़तुल अश्रफ़िय्या के बानी मबानी ह़ाफ़िज़े मिल्लत ह़ज़रते अ़ल्लामा शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़द्दिस मुरादआबादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه बड़े पाए के बुज़ुर्ग थे। सवानेह़ निगारों ने आप की कई करामात बयान की हैं। इन में एक येह भी है, **जामेअ़ मस्जिद मुबारक शाह** भी पहले मुख़्तसर ही थी और बोसीदा भी हो गई थी, आबादी की वुस्अ़त के लिह़ाज़ से मस्जिद का वसीअ़ होना भी ज़रूरी था, बहर ह़ाल पुरानी मस्जिद शहीद कर के नई बुन्यादें भरी गईं और मस्जिद की तौसीअ़ का काम शुरूअ़ हुवा। मुबारक पूर के मुसल्मानों ने बड़ी दिलचस्पी और लगन के साथ इस ता'मीर में भी ह़िस्सा लिया, ह़ज़रते **ह़ाफ़िज़े मिल्लत** رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه इस काम के भी रहनुमा और सर बराह थे, ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने जामेअ़ मस्जिद के लिये पूरी तवज्जोह और मेह़नत से चन्दे की फ़राहमी की, मुबारक पूर में काफ़ी जोशो ख़रोश था, ग़ुरबत के बा वुजूद मुसल्मान अपनी दीनी ह़मिय्यत का पूरा पूरा सुबूत दे रहे थे, मर्दों ने अपनी कमाई और औ़रतों ने अपने ज़ेवरात वग़ैरा से इमदाद की। छत पड़ने के बा'द ह़ाजी मुह़म्मद उ़मर निहायत परेशानी के आ़लम में दौड़े हुए ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के पास आए और कहा : ह़ाफ़िज़ साह़िब ! जामेअ़ मस्जिद की छत नीचे आ रही है अब क्या होगा ! ह़ाजी साह़िब येह कहते कहते रो पड़े। ह़ज़रते **ह़ाफ़िज़े मिल्लत** رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़ौरन उठे वुज़ू किया और ह़ाजी साह़िब के साथ घर से बाहर निकले, और अपने पड़ोसी ख़ान मुह़म्मद साह़िब को हमराह लिया, जामेअ़ मस्जिद पहुंच कर بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ पढ़ते हुए लकड़ी की चन्द बल्लियां लगा दीं (या'नी लम्बे बांस या लकड़ी

के थम लगा दिये) । اَلْحَمْدُ لِلّٰه कि छत न सिर्फ़ बराबर और दुरुस्त हो गई, बल्कि आज देखिये तो येह पता भी न लग सकेगा कि किस हिस्से की छत झुक रही थी !

ह़ाफ़िज़े मिल्लत की बा'ज़ आ़दाते मुबारका

वुज़ू करने के लिये बैठना होता तो क़िब्ला रुख़ बैठते । ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का पाजामा कभी इतना लम्बा न देखा गया कि टख़्ना छुप जाए । सच तो येह है कि आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की वज़्अ़ और लिबास का अन्दाज़ देख कर लोगों को शरई वज़्अ़ समझ में आ जाती थी । सफ़र व ह़ज़र में (या'नी सफ़र में होते या वत़न के अन्दर हर जगह) हुज़ूर ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की प्यारी प्यारी अदाओं में से येह भी था कि खाने से पहले और बा'द दोनों हाथ गिट्टे तक धोते और लुक़्मा ख़ूब चबा कर खाते, खाना ख़्वाह मिज़ाज के मुवाफ़िक़ हो या ना मुवाफ़िक़, उस में ऐ़ब न निकालते, खाने के बा'द फ़ौरन पानी न पीते बल्कि कुछ वक़्फ़े के बा'द पीते । इसी त़रह़ पानी जब भी पीते, चूस कर तीन सांस में पीते ।

सुरमा लगाने की बरकत से बुढ़ापे में भी बीनाई तेज़ थी

हुज़ूर ह़ाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की उ़म्र शरीफ़ सत्तर साल से मुतजाविज़ (या'नी ऊपर) हो चुकी थी, उस वक़्त का वाक़िआ़ है, ट्रेन से सफ़र कर रहे थे जिस बर्थ पर तशरीफ़ फ़रमा थे, इत्तिफ़ाक़ से उस पर एक डॉक्टर साह़िब भी बैठे थे, डॉक्टर साह़िब ने सिल्सिलए कलाम शुरूअ़ किया तो आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की जलालते इ़ल्मी से बहुत मुतअस्सिर हुए, और बार बार आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की त़रफ़ ह़ैरत से देखते रहे, दौराने गुफ़्तगू डॉक्टर साह़िब ने तअ़ज्जुब का इज़्हार करते हुए कहा : मौलाना साह़िब !

मैं आंखों का डॉक्टर हूं, मैं देख रहा हूं कि इस उ़म्र में भी आप की बीनाई में कोई फ़र्क़ नहीं, बल्कि आप की आंखों में बच्चों की आंखों जैसी चमक है, मुझे बताइये कि इस के लिये आख़िर क्या चीज़ इस्ति'माल करते हैं ? फ़रमाया : डॉक्टर साहिब ! मैं कोई ख़ास दवा वग़ैरा तो इस्ति'माल नहीं करता, हां एक अ़मल है जिसे मैं बिला नाग़ा करता हूं, रात को सोने के वक़्त सुन्नत के मुत़ाबिक़ सुरमा इस्ति'माल करता हूं और मेरा यक़ीन है कि इस अ़मल से बेहतर आंखों के लिये दुन्या की कोई दवा नहीं हो सकती । **अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

मस्लके आ'ला ह़ज़रत का इक गुलसितां इल्मे सदरुश्शरीअ़ह का बह़रे रवां
इल्म से जिस के सैराब सारा जहां लहलहाने लगा दीन का बोस्तां
जिस त़रफ़ देखिये इस क़दम के निशां ह़ाफ़िज़े दीनो मिल्लत पे लाखों सलाम

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

"इस्मिद" के चार ह़ुरूफ़ की निस्बत से सुरमा लगाने के 4 मदनी फूल

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हुज़ूर ह़ाफ़िज़े मिल्लत की सुन्नत से **मह़ब्बत** मरह़बा ! और सुन्नत की **मह़ब्बत** में सुन्नत के मुत़ाबिक़ सुरमा लगाने की बरकत दुन्या में भी बीनाई की ह़िफ़ाज़त की सूरत में ज़ाहिर हुई, अगर कोई मजबूरी न हो तो आप भी रोज़ाना सुन्नत के मुत़ाबिक़ सुरमा लगाने की निय्यत कीजिये । आप की आसानी के लिये आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के **मक्तबतुल मदीना** के रिसाले, **"101 मदनी फूल"** सफ़ह़ा 27 ता 28 से सुरमे के बारे में 4 मदनी फूल आप की त़रफ़ बढ़ाता हूं क़बूल फ़रमा कर अपने दिल के मदनी गुलदस्ते

में सजा लीजिये : ﴿1﴾ ''सुनने इब्ने माजह'' की रिवायत में है ''तमाम सुरमों में बेहतर सुरमा ''इस्मिद'' है कि येह निगाह को रोशन करता और पलकें उगाता है।'' (ابن ماجہ،4/115،حدیث:3497) ﴿2﴾ पथ्थर का सुरमा इस्ति'माल करने में ह़रज नहीं और सियाह सुरमा या काजल ब क़स्दे ज़ीनत (या'नी ज़ीनत की निय्यत से) मर्द को लगाना मक्रूह है और ज़ीनत मक़्सूद न हो तो कराहत नहीं। (عالمگیری،5/359) ﴿3﴾ सुरमा सोते वक़्त इस्ति'माल करना सुन्नत है। (मिरआतुल मनाजीह, 6/180) ﴿4﴾ सुरमा इस्ति'माल करने के तीन मन्क़ूल त़रीक़ों का ख़ुलासा पेशे ख़िदमत है : (1) कभी दोनों आंखों में तीन तीन सलाइयां (2) कभी दाईं (सीधी) आंख में तीन और बाईं (उलटी) में दो, (3) तो कभी दोनों आंखों में दो दो और फिर आख़िर में एक सलाई को सुरमे वाली कर के उसी को बारी बारी दोनों आंखों में लगाइये। (شعب الایمان،5/218-219) इस त़रह़ करने से اِنْ شَآءَاللہ तीनों पर अ़मल होता रहेगा।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! तक्रीम (या'नी इ़ज़्ज़त व बुज़र्गी) के जितने भी काम होते सब हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सीधी जानिब से शुरूअ़ किया करते, लिहाज़ा पहले सीधी आंख में सुरमा लगाइये फिर बाईं आंख में। **त़रह़** त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की दो कुतुब बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 16 (312 सफ़ह़ात) नीज़ 120 सफ़ह़ात की किताब ''**सुन्नतें और आदाब**'' हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबियत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **मदनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

तिलावते क़ुरआन करते हुए रोना

क़ुरआने करीम की तिलावत करते हुए रोना मुस्तहब है। फ़रमाने मुस्तफ़ा صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم है: क़ुरआने पाक की तिलावत करते हुए रोओ और अगर रो न सको तो रोने की सी शक्ल बनाओ।

(ابن ماجہ، 2/129، حدیث:1337)

978-969-722-221-6
01082218

فیضان مدینہ، محلہ سوداگران، پرانی سبزی منڈی کراچی
UAN +92 21 111 25 26 92 0313-1139278
www.maktabatulmadinah.com / www.dawateislami.net
feedback@maktabatulmadinah.com / ilmia@dawateislami.net